प्रश्न :- प्रमुख सिद्ध (कवि) और उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालें?

उत्तर :- सरहपा :-

ये सरहपाद, सरोजवज्र, राहुलभद्र आदि कई नामों से प्रख्यात हैं। जाति से ये ब्राह्मण थे। इनके रचना-काल के विषय में सभी विद्वान् एकमत नहीं हैं। राहुल जी ने इनका समय 769 ई० माना है, जिससे अधिकांश विद्वान सहमत हैं। इनके द्वारा रचित बत्तीस ग्रन्थ बताये जाते हैं, जिनमें से 'दोहाकोश' हिन्दी की रचनाओं में प्रसिद्ध है। इन्होंने पाखण्ड और आडम्बर का विरोध किया है तथा गुरु-सेवा को महत्व दिया है। ये सहज भोग-मार्ग से जीव को महासुख की ओर ले जाते हैं। इनकी भाषा सरल तथा गेय है एवं काव्य में भावों का सहज प्रवाह मिलता है। जैसे -

नाद न बिन्दु न रवि न शशि मण्डल,
चिअराअ सहावे मूकाल।
अनुरे उजु छाड़ि मा लेहु रे बंक,
निअहि बोहिमा जाहु रे लांक।
हाचेरे कांकण मा लोउ दापणं,
अपणे अपा बुझहु निअमणा।

सरहपा की इस कविता से स्पष्ट है कि उनकी भाषा तो हिन्दी ही है, केवल उस पर यत्र-तत्र अपभ्रंश का प्रभाव है। भाव और शिल्प की जो परम्परा सन्त-साहित्य में आकर नये रूप में उभरी, उसका बीज-रूप सरहपा के काव्य में द्रष्टव्य है।

शबरपा :-

इनका जन्म क्षत्रिय-कुल में 780 ई० में हुआ था। सरहपा से इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। शबरों का-सा जीवन व्यतीत करने के कारण ये शबरपा कहे जाने लगे। 'चर्यापद' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। ये माया-मोह का विरोध करके सहज जीवन पर बल

देते हैं उसी को महासुख की प्राप्ति का मार्ग बतलाते हैं। इनकी कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

हेरि ये मेरि तइला बाड़ी खसमे समतुला
षुकड़ए सेरे कपासु फुटिला ।
तइला बाड़िर पासेर जोहणा बाड़ी ताएला
फिटेलि अंधारि रे आकाश फुलिआ ॥

लुइपा :-

ये राजा धर्मपाल के शासन-काल में कायस्थ-परिवार में उत्पन्न हुए थे। शबरपा ने इन्हें अपना शिष्य बनाया था। इनकी साधना का प्रभाव देखकर उड़ीसा के तत्कालीन राजा तथा मंत्री इनके शिष्य हो गये थे। चौरासी सिद्धों में इनका सबसे ऊँचा स्थान माना जाता है। इनकी कविता में रहस्य-भावना की प्रधानता है। एक उदाहरण इस प्रकार है—

काआ तरुवर पंच बिडाल, चंचल चीए पइठो काल।
दिट करिअ महासुह परिमाण, लुइ भणइ गुरु पुच्छिअ जाण॥

डोम्भिपा :-

मगध के क्षत्रिय-वंश में 840 ई० के लगभग इनका जन्म हुआ था। विरूपा से इन्होंने दीक्षा ली थी। इनके द्वारा रचित इक्कीस ग्रन्थ बताये जाते हैं, जिनमें 'डोम्बि-गीतिका', 'योगचर्या', 'अक्षरद्विकोपदेश' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। इनकी कविता का एक उदाहरण इस प्रकार है :-

गंगा जउना माझेरे बहइ नाइ।
तांहि बुड़िली मातंगि पोइआ लीले पार करेइ।
बाहतु डोम्बी बाह लो डोम्बी बाटत भइल उछारा।
सद्गुरु पाउ, पए जाइब पुणु जिणउरा॥

कण्हपा :-

इनका जन्म कर्नाटक के ब्राह्मण-वंश में

840 ई० में हुआ था। बिहार के सोमपुरी स्थान पर ये रहते थे। जालन्धरपा को इन्होंने अपना गुरु बनाया था। कई सिद्धों ने इनकी शिष्यता स्वीकार की थी। इनके लिखे 74 ग्रन्थ बताये जाते हैं, जिनमें अधिकांश दार्शनिक विषयों पर है। रहस्यात्मक भावनाओं से परिपूर्ण गीतों की रचना करके ये हिन्दी के कवियों में प्रसिद्ध हुए। इन्होंने शास्त्रीय रूढ़ियों का भी खण्डन किया है। इनकी कविता का एक उदाहरण इस प्रकार है:—

आगम बेअ पुराणे, पंडित मान बहंति।
पक्क सिरिफल अलिअ, जिम वाहेरित भ्रमयंति ॥

कुक्कुरिपा:—

इनका जन्म कपिलवस्तु के एक ब्राह्मण-वंश में माना जाता है। इनके जन्म-काल का पता नहीं चल सका है। चर्पटीया इनके गुरु थे। इनके द्वारा रचित 16 ग्रन्थ माने जाते हैं। ये भी सहज जीवन के समर्थक थे। इनकी कविता का एक उदाहरण नीचे द्रष्टव्य है:—

हाँउ निवासी खमण भतारे, मोहोर विगोआ कहण न जाइ।
फेटलिउ गो माए अन्त उड़ि चाहि, जा एथु बाहाम सो एथु नाहि ॥

इन प्रमुख सिद्ध कवियों के अतिरिक्त अन्य सिद्ध कवि भी जन-भाषा में अपनी वाणी का प्रचार पद्य में करते थे; किन्तु उसमें कवित्व का उतना अंश नहीं, जिसके आधार पर उसे साहित्य के विकास में योगदान माना जा सके। जिन कवियों की पहले चर्चा की गई है, उनका साहित्य ही हिन्दी के सिद्ध-साहित्य के लिए गौरव का विषय है। इन कवियों ने हिन्दी-साहित्य में कविता की जो प्रवृत्तियाँ आरम्भ की, उनका प्रभाव भक्तिकाल तक चलता रहा। रूढ़ियों के विरोध का अक्खड़पन, जो कबीर आदि की

कविता में मिलता है, इन सिद्ध कवियों की देन है। योग- साधना के क्षेत्र में भी इनका प्रभाव पहुँचा। सामाजिक जीवन के [illegible] जो चित्र इन्होंने उभारे, वे भक्तिकालीन काव्य के लिए सामाजिक चेतना की पीठिका बन गये। कृष्ण- भक्ति के मूल में जो प्रवृत्ति- मार्ग है, उसकी प्रेरणा के सूत्र भी हमें इनके साहित्य में मिलते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्नावली

(1) प्रश्न !- सरहपा पर एक संक्षिप्त नोट लिखें?
(2) प्रश्न !- शबरपा पर एक संक्षिप्त नोट लिखें?
(3) प्रश्न !- लुइपा पर एक संक्षिप्त नोट लिखें?
(4) प्रश्न !- डोम्भिपा पर एक संक्षिप्त नोट लिखें?
(5) प्रश्न !- कण्हपा पर एक संक्षिप्त नोट लिखें?
(6) प्रश्न !- कुक्कुरिपा पर एक संक्षिप्त नोट लिखें?

पता !-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग - हिन्दी (D.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० न० - 7909046087
दिनांक - 14.02.2022